जयषंकर प्रसाद के उपन्यासों का विष्लेशणात्मक अध्ययन

डॉ. लालचन्द कहार
सह आचार्य (हिन्दी)
राजकीय कला महाविद्यालय कोटा

सारांष

प्रसाद के उपन्यासों की संख्या भले ही कम है किन्तु उनका विषय विस्तार, भौतिक चिन्तन, विशद सामाजिक संवदेना, नवीन भाव सृष्टि, अभिनव जीवन दृष्टि ने उन्हें उपन्यास साहित्य के गगन में दैदीप्यमान सितारा बना दिया है। इनका उपन्यास साहित्य उन्हें जीवन के समीप के कृतिकार के नये रूप में प्रकट करता है। उनके उपन्यास त्रय अपने आप में अलग किन्तु परवर्ती उपन्यासों पर व्यापक प्रभाव डालने वाले हैं।

प्रसाद के उपन्यासों का मूल उद्देश्य मानवीय जन तांत्रिक मूल्यों की स्थापना करना है, क्योंकि आज यह मूल्य खतरे में है। व्यक्ति आवरण मूलक जीवन जीने को विवश है। उनके उपन्यासों के प्रशस्त युग बोध से परिचित होना प्रत्येक सजग पाठक के लिए आवश्यक है, क्योंकि जीवन सत्य को उद्घाटित करते हुए उनके उपन्यास जीवन को सात्विकता की ओर ले जाने का प्रयास करते हैं।

कुंजी शब्द : उपन्यास, सामाजिक, चेतना, सांस्कृतिक अवमूल्यन, कालजयी, यथार्थ, आद"र्ा, ग्रामीण जीवन।

भूमिका :

उपन्यास नये युग की नयी अभिव्यक्ति का नया रूप है। साहित्य रूपों के उद्भव के संबंध में यह एक अखण्ड सत्य है कि वे व्यक्ति युग के शाश्वत और सामयिक रसायन का परिणाम होते हैं।''[1] उपन्यास वास्तविकता पर आधारित जीवन के समग्र पक्षों का दर्शाते हैं। जयशंकर प्रसाद के उपन्यास वास्तविकता के ठोस धरातल पर ही खड़े हैं।

प्रसाद के उपन्यास जीवन का सार प्रस्तुत करते हैं। प्रेमचन्द युग के रचनाकार प्रसाद यथार्थ वाद की अभिनव धारा और ऐतिहासिक धारा में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। प्रेमचन्द और प्रसाद से पूर्व उपन्यास साहित्य का विषय क्षेत्र संकुचित था हालांकि प्रसाद के मात्र तीन उपन्यास हैं, लेकिन अपने आप में नवीन विचारशैली का प्रतिपादन करते हुए एक विशेष वैशिष्ट्य से सम्पन्न होने के कारण उपन्यास विकास में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। अपने व्यापक संवेदन से समस्त उपन्यास साहित्य को प्रभावित करते हैं।

प्रेमचन्द युग से पूर्व उपन्यास मात्र मनोरंजन तक ही सीमित थे। उनमें सामाजिक सत्य होता तो था किन्तु कल्पना का प्राधान्य होने के कारण सामाजिक सत्य खुलकर प्रकट नहीं हो पाता था। प्रारम्भ के उपन्यासों में नीति और उपदेश का बाहुल्य था। इस उपन्यास ने आगे आने वाले उपन्यासों को गहरे से प्रभावित भी किया है। प्रसाद ने जिस कटु यथार्थ को इस कृति में दर्शाया है और आगे आने वाले उपन्यासों में यह यथार्थवाद एक नवीन रूप में उभर कर आया है।

प्रेमचन्द के साहित्य में सामाजिक विरूपताओं का आदर्शोन्मुखी समाधान प्रस्तुत किया है उन्होंने यथार्थ को तो दर्शाया है किन्तु आदर्श के वर्णन के साथ। ''प्रेमचन्द के पश्चात सामाजिक उपन्यासों की वर्णन शैली में महान परिवर्तन उपस्थित हुआ और आदर्शोन्मुख यथार्थवाद से हटकर उपन्यासों में वास्तविक यथार्थ का चित्रण प्रारम्भ हुआ। प्रसादजी का 'कंकाल' नामक उपन्यास इस वर्णन शैली का अग्रदूत बनकर आया और वह इस दिशा में हिन्दी साहित्य में अपने ढ़ंग का अकेला उपन्यास है''[2] वास्तव में यह उपन्यास यथार्थवादी उपन्यास धारा का प्रथम उपन्यास है। यह उपन्यास प्रसाद की महत्वपूर्ण देन है। यह कालजयी कृति उपन्यास धारा में एक नवीन वाद उत्पन्न करने वाली है कंकाल यथार्थवादी उपन्यास का वह पुष्ट बीज है जिस पर यथार्थवादी उपन्यासों का वृक्ष फलीभूत हुआ है। प्रसाद के कंकाल उपन्यास में ठोस पदार्थ, यथार्थ के दर्शन होते हैं नग्न यथार्थ के नहीं जो आगामी उपन्यासों में मिलता है।

कंकाल सामाजिक यथार्थवादी कृति है इसी से प्रेरणा पाकर प्रकृतिवादी यथार्थवादी, मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद, व्यक्तिवादी यथार्थवाद इत्यादि यथार्थवाद की विभिन्न धारायें फली फूली। यह कृति जहां मौलिक चिन्तन की परिचायक है वहीं आगे आने वाली कृतियों की प्रेरणा स्त्रोत भी।

प्रेमचन्द युग के पश्चात् के उपन्यासकारों ने इस उपन्यास से व्यापक प्रभाव ग्रहण किया। अज्ञेय, जैनेन्द्र, रागेय, राघव, धर्मवीर भारती, इलाचन्द्र जोशी, मोहन राकेश, भगवती प्रसाद वाजपेयी, रामेश्वर शुक्ल अंचल इत्यादि उपन्यासकारों ने यथार्थवादी उपन्यास लिखे इनके उपन्यासों में यथार्थ, वैविध्य दृष्टिगोचर होता है। इनकी प्रेरणा तो कंकाल ही है, किन्तु इन्होंने यथार्थ को

अलग–अलग रूपों में ग्रहण किया। अति यथार्थवाद, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, समाजवादी, साम्यवादी इत्यादि विविध यथार्थवादी रूपों का आधार कंकाल उपन्यास ही है। इस प्रकार प्रसाद ने हिन्दी उपन्यास धारा को अपने कंकाल का उपन्यास द्वारा एक नई परम्परा, अभिनव, विचारशैली, नवीन चिंतन दिया जिससे सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य प्रभावित हुआ है। यह प्रभाव वर्तमान में तो दृष्टिगत होता ही है आगे भी दृष्टिगत होता रहेगा।

प्रसाद के उपन्यास :

''तितली में प्रसाद किसानों के जीवन संघर्ष का चित्रण करते हैं।''[3] प्रसाद का दूसरा उपन्यास तितली ग्रामीण यथार्थ को दर्शाते हुए ग्रामगत समस्याओं का आदर्शोन्मुख समाधान प्रस्तुत करता है। गांधीवादी दर्शन से प्रभावित यह कृति ग्रामीण जीवन के सत्य का उद्‌घाटन करती है। इस कृति का उद्देश्य यही है कि ग्रामगत समस्याओं को उद्‌घोषित करने के साथ उनका एक भव्य आदर्शोन्मुख समाधान प्रस्तुत करना। इस कृति में प्रसाद ने उस वैभवमय गांव की कल्पना की है जो समस्त आवश्यकताओं का पूरा करता है और विरूपताओं से रहित है।

तितली उपन्यास में प्रसाद ने 'ग्रामीण परिस्थितियों में नया उत्साह भरने की चेष्टा की है। उन्होंने ग्रामीण नवनिर्माण संबंधी अपने सुझाव भी रखे हैं जो सहयोगिता और सहकारिता के आदर्शों पर आधारित है।''[4] इस उपन्यास में जो सहकारिता और जो सहयोग का सुनहरा अध्याय खोला है, वह वास्तव में प्रसाद का लक्ष्य है, सपना है।

''यह ग्राम सुधार आन्दोलन, संयुक्त परिवार की समस्याओं तथा सामन्तवादी सामाजिक संरचना की पतोन्मुख स्थितियां को सामने लाता है।''[5] गांधीवादी दर्शन से प्रभावित तितली ग्रामीण समाज का यथार्थ चित्र हमारे समक्ष साकार करता है आदर्शवादी समाज की स्थापना का स्वप्न लेखक ने सामाजिक समस्याओं को सुलझाकर साकार करने का प्रयत्न किया है। पूर्व और पश्चिम के सेतुबन्ध के मौलिक विचारों से ओत–प्रोत यह कृति आगे आने वाले उपन्यासों को प्रेरणा प्रदान करती है। समन्वय की सफल चेष्टा और गहन समाजवादी जीवन दृष्टि जो हम इस कृति में पाते हैं आगे की कृतियों में इसका प्रभाव देख सकते हैं।

भगवती प्रसाद वाजपेयी, अमृतलाल नागर, प्रताप नारायण श्रीवास्तव, वृन्दावन वर्मा, यशपाल कमलेश्वर, फणीश्वर नाथ रेणु, श्रीलाल शुक्ल आदि उपन्यासकारों के विविध सामाजिक उपन्यासों में हम तितली उपन्यास के व्यापक प्रभाव को देख सकते हैं। परवर्ती हिन्दी उपन्यासकारों की सामाजिक चेतना इस उपन्यास से प्रभावित है। समन्वय की भव्य चेष्टा तो हम कई उपन्यासों में पा सकते हैं।

पूर्व और पश्चिम को सेतुबन्ध बनकर यह कृति हमारे समक्ष आई है। इसमें प्रसाद की नवीन सांस्कृतिक चेतना का स्पन्दन मिलता है। भारतीय संस्कृति का महात्म्य, सांस्कृतिक औदात्य का निदर्शन करवाना इस उपन्यास की महत्वपूर्ण देन है।

प्रसाद की अन्तिम कृति ऐतिहासिक उपन्यास 'इरावती' अधूरी रह गई। अन्तिम कृति होने के कारण प्रसाद का सम्पूर्ण ज्ञान, समस्त दर्शन, कलात्मक वैभव इस कृति में उभर आया है। मौर्य साम्राज्य का पतन और शुंग वंश के उत्थान की यह महागाया अपरिसमाप्त होते हुए भी महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

पतनशील मौर्य साम्राज्य और पतनोन्मुख बौद्ध धर्म को इस ऐतिहासिक कृति में दर्शाया है। तत्कालीन सांस्कृतिक अवमूल्यन को दर्शाती यही कृति शुंग वंश के उत्थान को दर्शाती है। यही इसका उद्देश्य भी है। 'इरावती' ऐतिहासिक यथार्थवाद का दर्शन कराती है। बौद्ध, धर्म, आर्य धर्म इत्यादि के सम्बन्ध में इस उपन्यास द्वारा लेखक का गहन चिन्तन प्रकट होता है। जिसकी प्रेरणा आगे आने वाले ऐतिहासिक उपन्यासों ने तो ली है, साथ ही समस्त उपन्यास धारा को भी प्रभावित किया है। ऐतिहासिक उपन्यास में भी प्रसाद का गूढ़ वैचारिक चिंतन और युगीन गहन सामाजिक चेतना के दर्शन होते हैं जो वास्तव में बहुत ही प्रशंसनीय है।

हजारी प्रसाद द्विवेदी, शिव प्रसाद सिंह, इत्यादि ऐतिहासिक उपन्यासकारों ने इरावती से व्यापक प्रभाव ग्रहण किया है। इतिहास और कल्पना मिश्रित इरावती उपन्यास प्रसाद की प्रौढ़तम अन्यतम कृति है। ''इरावती में उन्होंने प्राचीन इतिहास ही महागाथा को रोमानी पर्यावरण में प्रस्तुत करना चाहा था कल्पना और कवित्व का इसमें निर्बाध उच्छतन मिलेगा।''[6] इस कृति का यदि वर्तमान परिपेक्ष्य में मूल्यांकन किया जाय तो यह कृति सार्थक सिद्ध होगी अपने नाटकों में उन्होंने अतीत के स्वर्णिम अध्याय को खोला हे, वही उपन्यासों में सांस्कृतिक अवमूल्यन को वाणी दी है।

पतनोन्मुख बौद्ध धर्म तथा विनाश होता मौर्य साम्राज्य, साम्राज्यवादी विलासी मनोवृत्ति का पोषक मौर्या का अन्तिम सम्राट बृहस्पति मित्र इत्यादि को इस कृति में दर्शाया है। अतीत के अवमूल्यनों को दर्शाने में प्रसाद का मौलिक चिन्तन प्रकट होता है यही प्रसाद की महत्वपूर्ण देन है।

कहना न होगा कि प्रसाद के उपन्यासों की संख्या भले ही कम है किन्तु उनका विषय विस्तार, भौतिक चिन्तन, विशद सामाजिक संवदेना, नवीन भाव सृष्टि, अभिनव जीवन दृष्टि ने उन्हें उपन्यास साहित्य के गगन में दैदीप्समान सितारा बना दिया है। इनका उपन्यास साहित्य उन्हें जीवन के समीप के कृतिकार के नये रूप में प्रकट करता है। उनके उपन्यास त्रय अपने आप में अलग किन्तु परवर्ती उपन्यासों पर व्यापक प्रभाव डालने वाले हैं। ''प्रसाद जी ने सामाजिक क्षेत्रों में नये स्वातन्त्र्य और नवीन आदर्शों का प्रवेश कराया जिनकी झलक हम विशेष कर उनके उपन्यासों में देखते हैं।''[7]

प्रसाद के उपन्यास उनकी भूमावृत्ति की विशद् प्रवृत्ति को दर्शाते हैं भूमावृत्ति से तात्पर्य है विस्तार यानि अपने संकुचित, सीमित विचारों को त्यागकर उन्मुक्त गगन में, सहृद्य संवेदना पूर्ण विचारों, विशाल दृष्टि से अपने सीमित दायरों को तोड़कर आगे बढ़े यही भूमावृत्ति रचनाकार को रचना धर्म से जोड़ती है। प्रसाद का चिंतन और उनकी भूमावृत्ति उनके उपन्यासों में हम पाते हैं लेखक ने तो विस्तार पा ही लिया है किन्तु उसकी रचना द्वारा पाठकों के संकुचित प्रतिमान बदल गये हैं। यही प्रसाद की महत्वपूर्ण देन है क्योंकि यहां पाठक भी अपनी क्षुद्र कराओं को तोड़कर स्वछन्द रूप में सर्वधर्म समभाव से प्रेरित हो गया है। उसका स्व पूर्णतः लुप्त हो गया। उसका लेखक ही संवेदना से गहन संबंध स्थापित हो गया है यहीं कृतिकार की सार्थकता है।

प्रसाद के उपन्यासों का मूल उद्देश्य मानवीय जन तांत्रिक मूल्यों की स्थापना करना है, क्योंकि आज यह मूल्य खतरे में है। व्यक्ति आवरण मूलक जीवन जीने को विवश है। उनके उपन्यासों के प्रशस्त युग बोध से परिचित होना प्रत्येक सजग पाठक के लिए आवश्यक है, क्योंकि जीवन सत्य को उद्घाटित करते हुए उनके उपन्यास जीवन को सात्विकता की ओर ले जाने का प्रयास करते हैं।

उनके उपन्यासों का प्रभाव मानवीय जीवन गत तथ्यों को प्रकट करने में तथा परवर्ती उपन्यासों में परिलक्षित होता है। प्रसाद के उपन्यासों का यथार्थवाद, समाजवाद, साम्यवाद ऐतिहासिक यथार्थवाद इत्यादि वर्तमान उपन्यास साहित्य में परिलक्षित होते हैं, और यह आगे आने वाले उपन्यासों में भी परिलक्षित होंगे क्योंकि उन्होंने अपने उपन्यासों के विषय जो चुने हैं। वह जीवन के समीप के हैं इसलिए वे आज ही नहीं कल भी अपनी प्रभावशीलता का उद्घोष करेंगे।

''प्रसाद के उपन्यास सही अर्थ में जीने की कला सिखाते हैं। रजकता और सम्मोहन की कमी नहीं किन्तु जिन्दगी की निमर्म असलियत से दो चार होने के लिए जिस मानवीय चरित्र की आवश्यकता हो सकती है वह उनमें सबसे ऊपर हैं वही रचनाकार का वास्तविक प्रदेय है।''[8] कहना न होगा कि प्रसाद की देन वास्तव में उनके गहन जीवन दर्शन, गूढ भाव वैशिष्ट्य और जीवन की विषमताओं से साकार होकर उनका समाधान जो उन्होंने प्रस्तुत किया वहीं है। जीवन धर्मी गंघ से युक्त उनकी अस्तित्व चेतना का स्पन्दन उनकी रचनाओं में मिलता है। युगीन सत्यों का सम्यक् मूल्यांकन और फिर उनका सार्थक समाधान प्रसाद की एक प्रमुख देन है।

प्रसाद बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं– कवि रूप, नाटककार रूप, कहानीकार रूप और निबंधकार रूप में। साहित्य की प्रत्येक विधा को उन्होंने जाना और समझा ही नहीं अपितु उनके गूढ़ तत्वों को आत्मसात् करते हुए व्यापक आयामों के साथ उन्हें रचा है। उनका उपन्यासकार रूप उन्हें जीवन के समीप का रचनाकार घोषित करता है। ''उपन्यास तो जीवन की ऐसी झलक दिखाने का उद्देश्य रखता है जिसमें मूल जीवन घटना और उसकी कलात्मक अभिव्यंजना में कोई अन्तर ही न दिखाई दे''[9] प्रसाद के उपन्यास इसी से वैशिष्ट्य से सम्पन्न है। जीवन की सच्ची झलक को दिखलाने का साहस मात्र रचनाकार में ही होता है। समाजिक सत्य का अंकन किसी भी साहित्यकार की बहुत बड़ी शक्ति और महान देन होती है।

इस कालसिद्ध कलाकार में अपन कालजयी कृतियों में अपनी व्यापक मानवीय संवेदना, विवेकपरक राष्ट्रवादी चिंतन, मानवीय जनतांत्रिक मूल्यों, व्यापक नारी संवेदन, विकसित आर्थिक चेतना वर्ग मुक्त राजनीतिक यथार्थ, दृष्टि सामाजिक विसंगति इत्यादि विभिन्न जीवनगत समस्याओं को पिरोया है। धर्मोन्माद और विलासोन्माद के इस अबौद्धिक युग में प्रसाद के उपन्यास एक नवीन व्यावहारिक बृद्धिवादी चेतना को लेकर हमारे समक्ष आये हैं। व्यक्ति स्वतंत्रता, आत्मा की स्वतंत्रता, कर्मयोग का महान संदेश प्रसाद के उपन्यासों में मिलता है।

''प्रसाद जी के उपन्यासों में भारत के नव निर्माण का प्रयत्न है। उसमें मानव के लिए कर्मठता और साहस का संदेश है। देश के उज्ज्वल भविष्य के प्रति लेखक की पूर्ण आस्था है''[10] किसी भी साहित्यकार की रचना का कोई छोटा उद्देश्य नहीं वरन् महान उद्देश्य होता है। प्रसाद के उपन्यास भी महान लक्ष्य लेकर रचे गये हैं। उनका गहन राष्ट्रवादी चिंतन भारत के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है। यही कृतिकार का महान लक्ष्य और महान देन है।

मात्र छायावादी कवि के रूप में विख्यात प्रसाद के इन प्रगतिशील विचार वाले यथार्थवादी दृष्टि से सम्पन्न उपन्यासों से प्रसाद की नवीन दृष्टि का परिचय मिलता है। वास्वत में प्रसाद और समग्र साहित्य का पुनर्मूल्यांकन आवश्यक है, क्योंकि साहित्य प्रेमियों ने उनके मात्र कवि रूप को ही जाना और समझा है। प्रसाद में साहित्य के विकासात्मक पल्लवन को बहुत कम व्यक्तियों को पहचाना है। प्रसाद को उनके साहित्य प्रेमियों ने मात्र रोमांटिक कवि कहकर उनके साहित्य क्षेत्र को पहचाना है। प्रसाद को उनके साहित्य प्रेमियों ने मात्र रोमांटिक कवि कहकर उनके साहित्य क्षेत्र को सीमित कर दिया है। जबकि प्रसाद के

सात्यि का विषय क्षेत्र और संवेदना व्यापक हे। उनके उपन्यास और कहानी इसके प्रमाण है। ''कुछ रोमांटिक कवियों ने उपन्यास लिखे तो इन्हें प्रमुख काम में गिना नहीं गया हैं, कवि प्रसाद के उपन्यासों के साथ यही दुर्घटना हुई''[11] अपने अत्यधिक विशद सामजिक सत्यों के निदर्शन और व्यापक संवेदना के बावजूद प्रसाद को रोमांटिक कवियों के घेरे में बांध दिया गया जबकि प्रसाद ने अपने समय की सच्चाइयों को मात्र संस्पर्श ही नहीं किया अपितु उनक यथार्थ उद्घाटन भी किया है। ''अपना जिस तरह का रचनात्मक विकास निराला ने 'कुकुरकुत्ता' और 'नये पते' की कविताओं में किया वैसा ही विकास प्रसाद का कंकाल और तितली में हुआ है।''[12]

कामायनी में उन्होंने विज्ञान द्वारा प्रमुख साधनों की वृद्धि के साथ हमारी विलासिता और लोभ की भावना की असीम वृद्धि तथा यंत्रों के उपयोग से जनता में फैली हुई घोर दरिद्रता, अशक्तता, जड़ता आदि के कारण विषम हो रही वर्तमान व्यवस्था का मात्र आभास दिया है, लेकिन कंकाल और तितली में उन्हें पूरी तरह खोलकर समाज के समक्ष रखा है यह साहित्य प्रसाद का वह अछूता पक्ष है जिसे साहित्य प्रेमियों को जानना चाहिए।

''प्रसाद में ऐसी मधुमयी प्रतिभा और ऐसी जागरूक भावुकता अवश्य थी कि उन्होंने इस पद्धति का अपने ढंग पर बहुत ही मनोरम विकास किया''[13] इसी जागरूकता ने प्रसाद को ये यथार्थवादी उपन्यास लिखने की प्रेरणा दी। कंकाल और तितली में वह अपनी रोमान्टीसिज्म की सीमा को तोड़कर पूरी तरह से बाहर आये हैं। वर्तमान समाज के विकृत परविेश को कंकाल में दर्शाया है, और वहीं तितली में एक आदर्शवादी समाज की स्थापना की है। ऐतिहासिक इरावती में हमारे सांस्कृतिक अवमूल्यनों को दर्शाते हुए प्रसाद यह कहना चाहते है कि कहीं हम आज उस बीती कहानी को तो नहीं दोहरा रहे है? अपने तीनों उपन्यासों में उन्होनें समाज से प्रश्न किया है।

वास्तव में प्रसाद ने अपने उपन्यासों के माध्यम से समाज को चुनौती दी है साथ ही अपने जागरूक सामाजिक चिंतक के रूप में हमारे समक्ष प्रकट किया है। प्रसाद का यह समृद्ध उपन्यास साहित्य वास्तव में प्रसाद को उनके घेरे में बाहर निकलता है। उनके उपन्यासों ने आने वाली हिन्दी उपन्यास धारा को एक अभिनव मोड़ प्रदान किया है।

हिन्दी के परवर्ती उपन्यासकारों के लिए प्रसाद–प्रस्थान बिन्दु है यह इस महान स्रष्टा की सृष्टि का महनीय अवदान है। अपने समृद्ध विचारों से उपन्यास साहित्य को तो प्रभावित किया ही है, साथ ही अन्य साहित्यिक विधाओं को भी अभिनव विचार प्रदान किये हैं। नाटककार प्रसाद का इतिहास परक गहन चिन्तन, कवि प्रसाद का संवेदनशील भावुक प्रेमी हृदय, आलोचक निबन्धकार प्रसाद का गूढ़ वैचारिक वैशिष्ट्य और उपन्यासकार प्रसाद का ठोस यथार्थवादी चिंतन इस प्रकार बहुमुखी प्रतिभा के धनी प्रसाद वास्तव में आज तक साहित्यप्रेमी जगत को अपनी प्रतिभा से कला से प्रभावित करते हैं और सदा परवर्ती साहित्यकारों को प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

निष्कर्ष :

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मानवता के आविष्ट गहन जीवन दर्शन से सम्पृक्त, राष्ट के उज्ज्वल भविष्य के प्रति आशान्वित नैतिक मूल्यों के प्रेरक प्रेम के उदात्त स्वरूप के प्रतिष्ठापरक कलात्मकता की महिमा से सम्पन्न, नारीत्व के गौरव और सौन्दर्य के उद्घोषक, अतीत के अवशेषों की मार्मिकता के व्यंजक अपने विवेक परक राष्ट्रवादी जनतांत्रिक साम्यवादी चिंतन और धर्म दर्शन को व्याख्यायित करने वाले तथा उज्ज्वल सामाजिक और मानवीय चेतना के उपदेशक के रूप में कालसिद्ध कलाकार प्रसाद के ये कालजयी उपन्यास चिर अमर रहेंगे। उनके सीमित घेरे जिसे साहित्य प्रेमियों ने ही संकोच प्रदान किया है उसको ये उपन्यास ही नहीं अपितु उनके समस्त साहित्य की यथार्थवादी चेतना जिसका विशद् रूप उनके उपन्यासों में मिलता है उन्हें रोमांटिक कवियों के सीमित घेरे से अलग करता और उन्हें सजग साहित्यकार सिद्ध करता है। अपने सशक्त युग बोध प्रशस्त यथार्थवाद और व्यावहारिक जीवन चेतना के कारण परवर्ती उपन्यासों में उनकी उज्ज्वल परम्परा आज भी परिलक्षित होती है। उनकी इस महान देन में जब तक हिन्दी साहित्य की श्रेष्ठ परिपाटी वर्तमान है, उसमें कोई कमी नहीं आंकी जा सकती। कहना न होगा कि ''निसन्देह प्रसाद अपने युग के महान चिंतक प्रयोक्ता और सर्वश्रेष्ठ सर्जनात्मक प्रतिभा है।''[14]

संदर्भ :

1. डा. मक्शनलाल शर्मा – हिन्दी उपन्यास सिद्धान्त और विवेचन पृष्ठ 17
2. त्रिभुवनसिंह – हिंदी उपन्यास शिल्प और प्रयोग पृष्ठ 108
3. रामविलास शर्मा – निराला की साहित्य साधना पृष्ठ 555
4. नन्द दुलारे वाजपेयी – नया साहित्य नये प्रश्न पृष्ठ 180
5. विजय मोहन सिंह – आधुनिक उपन्यासों में प्रेम की परिकल्पना पृष्ठ 172
6. श्री वास्तव और रस्तोगी – प्रसाद का कथा साहित्य पृष्ठ 74
7. नन्द दुलारे वाजपेयी – जयशंकर प्रसाद पृष्ठ 24
8. रस्तोगी और श्रीवास्तव – प्रसाद का कथा साहित्य पृष्ठ 76

9. नन्द दुलारे वाजपेयी – नया साहित्य नये प्रश्न पृष्ठ 212
10. जय किशन प्रसाद खण्डेलवाल – हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियां पृ. 703
11. शंभूनाथ– दूसरे नवजागर की ओर पृष्ठ 44
12. शंभुनाथ – दूसरे नव जागरा की ओर पृष्ठ 44
13. रामचन्द्र शुक्ल – हिन्दी साहित्य का इतिहास पृष्ठ 367
14. रामचन्द्र तिवारी – हिन्दी का गद्य साहित्य पृष्ठ 434